कालिदास की कृतियों में वैज्ञानिकता

शोधच्छात्रा
आयूषि (संस्कृत)
वनस्थली विद्यापीठ
ayushijadon10@gmail.com

भूमिका

ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक संस्कृत भाषा के माध्यम से सभी प्रकार के वाङ्मय का निर्माण होता आ रहा हे। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक किसी न किसी रूप में संस्कृत का अध्ययन अध्यापन अब तक होता चला आ रहा है। भारतीय संस्कृति और विचारधारा का माध्यम होकर भी यह भाषा अनेक दृष्टियों से धर्मनिरपेक्ष रही है। इस भाषा में साहित्यिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैरवनि की आदि प्राय: समस्त प्रकार के वाङ्मय की रचना हुई है। संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रंथरत्नों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थरत्नों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी प्राचीन भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा परम्परा अविछिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घ काल तक रहने पाई है। अति प्राचीन होने पर इस भाषा की सृजन—शक्ति कुण्ठित नहीं हुई। भारतीय संस्कृति विश्ववन्द्या संस्कृति है। उसकी आधारशिला अध्यात्मक की सुदृढ़ भित्ति पर उन त्रिकालदर्शी ऋषियों द्वारा स्थापित है, जो दिव्यदृष्टि सम्पनन रागद्वेष शून्य एवं समदर्शी थे। उनकी दृष्भि इहलोक तक ही सीमित नहीं थी। उन्होंने तप तथा समाधिजन्य दिव्य ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर जो सिद्धान्त स्थिर किये हैं, वे सर्वथा निर्दोष, भ्रान्तिशून्य तथा त्रैकालिक सत्य है तथा आज के वैज्ञानिक युग में भी वे शाश्वत सत्य हैं।

भाषा का क्षेत्र हो या धर्म का, विज्ञान का हो या दर्शन का, विधिशास्त्र का हो या अन्य शास्त्रों का प्रत्येक क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये संस्कृत का विशाल वाङ्मय उपलब्ध है। सहस्त्रों वर्ष बीत जाने पर भी संस्कृत साहित्य सर्वाङ्गीण तथा सुसमृद्ध होने के कारण अद्वितीय है।

संस्कृत भाषा की सुरसरिता की धारा से परिप्लावित भारतवर्ष ने ऐसे अनेक दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, साहित्यिकों, इतिहासकारों, तलाविदों तथा कवियों को समुत्पन्न किया। जिनके पावन संस्मरण मात्र से हम धन्य हो उठते हैं। आज वैज्ञानिक चमत्कारों से व्याप्त नई सभ्यता की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो हमारे चक्षु उसकी चकाचौंध से भले ही अभिभूत हो जायें परन्तु इस आधुनिक सभ्यता का मूल आधार तो किसी न किसी रूप में संस्कृत वाङ्गमय ही रहा है।

प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत वाङ्गमय के अनन्य पुजारी महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में कुछ वैज्ञानिकों तथ्यों का अन्वेष्णण कर उन पर चिन्तन करने का प्रयास किया गया हे। महाकवि कालिदास के ग्रन्थ आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं। उनके ग्रन्थों में जो वैज्ञानिक तथ्य पाये जाते हैं वे निम्नलिखित हैं, जैसे महाकवि कालिदास और भौतिक विज्ञान के विषय में कही गई है।

(१) पृथिवी मार्ग वाले द्रुतगामी यान

अभिज्ञानशाकुन्तल के प्रथम अंक के वर्ण्य में रथ के वेग के कारण जो वस्तु छोटी सी दिखायी पड़ती थी। वह सहसा विशाल हो जाती है, जो वस्तु टूटी हुयी सी प्रतीत होती है। वह जुड़ी हुयी सी लगती है। अभिज्ञान में यह बात इस श्लोक के माध्यम से बताई गई है, यथा —

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद् विपुलतं, यदद्धा विछिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्
प्रकृत्या यद् वक्र तदपि समरेख नयनयोर्न मे इरे किंचित क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्

अभिज्ञानशाकुन्तलम् — १/९

अर्थात् आज के युग में भी तीव्रगामी यानों जैसे रेलगाड़ी, कार आदि द्वारा ऐसा आभास किया जा सकता है। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन समाज में भी तीव्रगामी यान होते थे भले ही उनका स्वरूप रथ के समान या अन्य किसी प्रकार का रहा होगा।

(२) आकाश मार्ग में वायुयानों का उपयोग

महाकवि कालिदास के समय में वायुमार्ग में चलने वाले अनेक यान प्रचलित थे। अभिनशाकुन्तल के छठे अंक में सानुमती विमान से आती है। सप्तम अंक में दुष्यन्त मातलि के साथ रथ द्वारा आकाशमार्ग से पृथ्वी की ओर लौट रहा है।[१] इसी प्रकार विक्रमोर्वशीयम् में भी पुरुरवा के रथ के तीव्र वेग का अत्यन्त सचित्र वर्णन हुआ है। पुरुरवा का रथ आकाश में बादलों के बीच तेजी से दौड़ रहा है, बीच में आने वाले बादल चूर—चूर होकर उड़ रहे हैं।

रघुवंश महाकाव्य के १३वें सर्ग में श्रीराम सीता तथा लक्ष्मण सहित पुष्पक विमान से वायुमार्ग द्वारा अयोध्या लौटते हैं तथा छठे सर्ग में स्वयंवरसभा में सिंहासनों पर बैठे हुये राजा लोग इस प्रकार दिखायी दे रहे थे मानों देवता लोग अपने विमानों में घूम रहे हों।

आज वैज्ञानिक युग में भी वायुयान के भिन्न—भिन्न रूप देखे जा सकते हैं। प्राचीन समय में भी आकाशमार्गी रथ तथा पुष्पक आदि अनेक प्रकार के विमान प्रचलन में थे।

ततः प्रविशत्याकाशयानेन सानुमती नामाप्सरा।[२]

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् — ६/१)

अग्रेयान्ति रथस्य रेणुपदवीं व्यूर्णीभवन्तो
घनाश्चक्रभ्रान्तिररान्तरेषु वितनोत्पन्यामिवारावलीम्।
चित्रारम्भविनिश्चलं हयशिरस्यायामवञ्चामरं
यन्मध्ये समवस्थितां ध्वजपटः प्रान्ते च वेगानिलात्।।[३]

(विक्रम. — १/४)

(३) आकाश विद्युत (Thundering and Lightening)

कुमारसंभवम के चौथे सर्ग में चन्द्रमा के विषय में बताया है, कि चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर उसकी चाँदनी भी अस्त हो जाती है। तथा मेघ के साथ बिजली भी विलीन हो जाती है।[४]

शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीयते।
प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपत्रं हि क्विेतनैरपि।।

(कुमारसंभवम् — ४/३३)

आधुनिक वैज्ञानिक भी आकश में बिजली चमकने का कारण बादलों के ऋण व धन आवेग को आपस में टकराना स्वीकार करते हैं। कुमारसम्भव में महाकवि कालिदास ने अपनी काव्य कौशलता का परिचय देते हुए कहा है कि मेघों के टकराने से ही बिजली की उत्पत्ति होती है। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है।

(४) कुमारसम्भव में इन्द्रधनुष का वर्णन

महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थ कुमारसम्भव के आठवें सर्ग में हिमालय पर बैठे हुए शिव पार्वती को कहते हैं, कि ये तुम्हारे पिता के झरने बह रहे हैं परन्तु इन झरनों में पहले जैसी शोभा नहीं दिखाई दे रही है। सूर्य के डूब जाने के कारण उसकी किरणों का सम्पर्क झरनों के जलकणों से नहीं हो रहा है। अतः ये इन्द्रधनुष के परिवेश से शून्य है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जब जल की बूँदे सूर्य की किरणों के सम्पर्क में आती है, तभी इन्द्रधनुष का निर्माण होता है। महाकवि भी इसी कारण इन्द्रधनुष का दिखायी देना स्वीकार करते हैं।

(५) कुमारसम्भव में तरल पदार्थ का वर्णन

महाकवि कालिदास के ग्रन्थ कुमारसम्भव के पंचम सर्ग में नीचे ओर बहते हुए पानी कौन रोक सकता है, ऐसा कहा गया है।[५]

इति ध्रवेच्छामनुशासती सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात्।
क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्।।

(कुमारसम्भव — ५/५)

आधुनिक भौतिकशास्त्री प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध कर चुके हैं, कि प्रत्येक तरल पदार्थ ऊपर से नीचे ओर बहता बहता है, क्योंकि उसमें 'श्यानता' का गुण पाया जाता है। कुछ तरल पदार्थ पानी पैट्रोल आदि ऐसे हैं, जो सुगमता से बहतते है तथा कुछ द्रव जैसे शहद, कोलतार ऐसे पदार्थ हैं, जो कठिनता से बहते हैं। द्रवों के इस गुण को श्यानता कहते हैं, जिन द्रवों की श्यानता अधिक होती है, वे कठिनाई से बहते ळैं, जिनकी श्यानता कम होती है, वे आराम से बहते हैं, तरल पदार्थ श्यानता के कारण नीचे की ओर बहता है। महाकवि ने भी पानी का नीचे की ओर बहना ही स्वीकार किया है।[६]

(६) आरामदायक वाहन

कवि कालिदास के ग्रन्थ रघुवंश के द्वितीय सर्ग में राजा—दिलीप सुदक्षिणा के साथ ऐसे रथ पर सवार होकर या रहे हैं, जिसके चलने पर जो ध्वनि सुनाई दे रही है वह कानों को बहुत सुखद आनन्द का अनुभव करती हुई सुख—सुविधाओं से परिपूर्ण होने से उनकी यात्रा बड़ी आराम दायक हो गयी थी। यह इस श्लोक में बताया गया है—

श्रोताभिरामध्वनिना रथेन स धर्मपत्नीसहितः सहिष्णुः।

ययावनुड़्घातसुखेन मार्गं स्वेनेव पूर्णेन मनोरथेन।।[७]

(रघुवंश — २/७२)

आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी अनेक आरामदायक गाड़ियों का निर्माण हो चुका है, जो अनेक सुख—सुविधाओं से परिपूर्ण होती है।

(७) प्रकाश का परावर्तन (Reflection of Light)

कालिदास के ग्रन्थ रघुवंश के तेरहवें सर्ग में समुद्र की लहरों व सर्पों के साम्य तथा वैषम्य का वर्णन करते हुए कहते हैं, उन्होंने कहा है, कि सर्प व तरंग दोनों एक समान हें, किन्तु इनमें यह भिन्नता है, कि सर्पमणि सूर्य के प्रकाश से चमकने के कारण सर्प लहरों से भिन्न प्रतीत हो रहे हैं।[८]

वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गा महोर्मिपिस्फूर्जथुनिर्विशेषाः।
सूर्याशुसंपर्क—समृद्धैरागै—व्यंज्यन्त एते मणिभिः फणस्थै।।

(रघवंश — १३/१२)

आधुनिक वैज्ञानिक भी मणियों में परावर्तन का गुण स्वीकार करते हैं, जिसके कारण वे चमकती हैं।

(८) कालिदास और उनका चिकित्साशास्त्र

कालिदास ने अपने नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल के तृतीय अंक में अनुसूया शकुन्तला के सन्ताप के कारण सम्बन्धों में जिज्ञासा करती हुयी कहती है, आप मुझे बताओ कि तुम्हारे सन्ताप का क्या कारण है। कहा जाता है कि किसी भी रोग को समाप्त करने के लिए सर्वप्रथम उस रोग को जानना चाहिए, क्योंकि किसी भी रोग की जाने बिना उसकी चिकित्सा नहीं की जा सकती है।[९]

किन्तु योदृशीतिहासनिबन्धेषु कामयनानामवस्था श्रूयते तादृशीं तव
पश्यामि कथय किं निमित्त ते सन्ताप विकार खलु।
परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भ प्रतीकारस्य''

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् — ३/६ श्लोक की सूक्ति)

आधुनिक डॉक्टर भी जो एक्सरे करते हैं वे खून मलमूत्रादि के परीक्षण के द्वारा भली प्रकार से रोग की अवधारणा (Diagnosis) करके ही चिकित्सा प्रारम्भ करते हैं। अभिनशाकुन्तलम् के तृतीय अंक में राजा शकुन्तला की थकारन को दूर करते

हुए कहता है, कि हे प्रिये जो कमल रूपी पैरों को मैं अपी गोद में रखकर उस प्रकार दबाऊँ जिस प्रकार तुम्हें सुख की प्राप्ति हो।[१०]

किं शीतलै क्लमविनोदिभिरार्द्रवातान्स—
चारयामि नलिनीदलतालवृन्नतै।
अंके निधाय करभोरु यथासुखं ते।
संवाहयामि चरणावुत पद्माताभ्रौ।।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् — ३/१८)

इसी प्रकार रघुवंश के द्वितीय सर्ग में भी राजा गुरुवशिष्ठ तथा गुरुपत्नी अरुन्धती के पैर दबाने के पश्चात् ही सन्ध्यापूजन करते थे।[११]

गुरोः सदास्य निपीड्य पादौ समाप्य संध्या च विधिं दिलीपः।
दोहावसाने पुनरेव दाग्धीं भजे सुशोभिश्चरिपुर्निपणाम्।।

(रघुवंश — २/२३)

कहा जाता है कि आधुनिक समय में भी थकान को दूर करने के लिये रक्त संचार को सुचारू करने के लिये विभिन्न प्रकार से पैरों पर मालिश की जाती थी। कवि के ग्रन्थ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अंक में शाकुन्तला के शरीर को निरोगी रखने के लिये गौतमी द्वारा कुशायुक्त जल छिड़कने का वर्णन प्राप्त होता है।[१२]

अनेन दर्भोदकेन निराबाधमेव ते शरीरं भविष्यति।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् — ३/२१ श्लोक की सूक्ति)

आधुनिक समय में भी रोगनिदान की तीन विधियाँ प्रमुख मानी गई हैं। यथा — आयुर्वेद, एलोपैथिक तथा होम्योपैथिक। इन तीनों विधियों में सबसे श्रेष्ठ विधि आयुर्वेद मानी है, क्योंकि आयुर्वेद में प्रत्येक पौधे को औषधीय गुणों से युक्त माना है। इस बात को तथ्य, परीक्षणों एवं प्रयोगों द्वारा चिकित्सा विज्ञान ने भी सिद्ध किया है। कैंसर जैसी भयंकर बीमारी का भी पौधों के हार्मोन से इलाज सम्भव मानते हैं।[१३] जिस हार्मोन के कारण अंकुरण सूर्य की तरफ घूमते हैं। उस हार्मोन को शक्तिशाली अस्त्र के रूप में देखते हैं।

(९) कालिदास के ग्रन्थों में वनस्पति विज्ञान

कालिदास के ग्रन्थ अभिज्ञानशकुन्तलम् के चतुर्थ सर्ग में इस विषय का वर्णन एक श्लोक द्वारा स्पष्ट किया गया है, कि जब शकुन्तला अपने पतिगृह को प्रस्थान करती हैं, तब वृक्षों ने भी उसे सस्नेह विदा किया है। किसी ने चन्द्रमा के तुल्य श्वेत मांगलिक वस्त्र, तो किसी ने पैरों को रंगने हेतु लाक्षारस (महावर) प्रदान किया हे।[१४] यह बात इस श्लोक द्वारा स्पष्ट की गई है— जो इस प्रकार है—

क्षौमं केनेचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं।
निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुलभ लाक्षारस केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै।
र्दत्तान्याभरणनि तत् किसलयोद्भेद प्रतिद्वन्द्विभि।।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् — ४/५)

इसी प्रकार रघुवंश के १३वें सर्ग में श्रीराम सीता से कह रहे हैं, कि — हे सीते! तुम रावण के द्वारा जिस मार्ग से अपहरण कर ले जायी गयी थीं, उस मार्ग को स्पष्ट कहने में असमर्थ इन लताओं ने अपने विनम्र पत्रों वासली शाखारूपी भुजाओं से दया करके मुझे दिखाया था।[१५] इस श्लोक में स्पष्ट बताया गया है, यथा—

त्वं रक्षसा भीरु यतोऽपनीता त मार्गमेताः कृपया लता मे
अदर्शयन्वक्तुमशक्नुवत्यः शाखाभिरावर्जितपल्लवाभिः।।

(रघुवंश — १३/२४)

इसी प्रकार डॉ. जगदीशचन्द्र वसु ने भी वृक्षों में चैतन्य को सिद्ध किया है उन्होंने भी यह स्वीकार किया है।

इसके अतिरिक्त रघुवंश के छठे सर्ग में यह वर्णन है, कि कमल के पुष्पों को हवा की लहरें एक दूसरे कमल तक बहा ले जाती है।

कश्चित्काराभ्यामुपगूढनालमालोलपत्राभिहतादूरेफम्।
रजोभिरन्तव्यरिवेषबन्धि लीलारविन्द भ्रमयाञ्चकार।।[१६]

(रघुवंश — ६/१३)

वनस्पति वैज्ञानिक भी यह सिद्ध कर चुके हैं, कि कमल के संवहन तन्त्र में हवा भरी हुयी होती है, जिससे कमल पानी में तैरने में सक्षम होता है। कहा जाता है, कि संवहन पौधों में पत्तियों के द्वारा पर्णहरित और सूर्य के प्रकाश के द्वारा तैयार भोजन को फ्लोइम नामक उत्तक जड़ों तक पहुँचाता है। इसी व्यवस्था को संवहन तन्त्र कहते हैं।

(१०) कालिदास के द्वारा जीवविज्ञान का वर्णन

जीवविज्ञान के विषय में कालिदास ने अपने ग्रन्थ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में शकुन्तला को तिरस्कृत होकर तथा क्रोधावेश में आकर पति के प्रतिकूल आचरण न करने की आज्ञा देते हैं।[१७]

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्ति सपत्नीजने।
भर्तुर्विप्रकृताऽपि शेषणतया भा स्म प्रतीपं गमः।।
भूयिष्ठ भव दक्षिणा परिजने भाष्येध्वनुत्सेकिनी।
यान्त्येव गृहिणीपद युवतयो वामा कुलस्याधय।।

(शाकु. — ४/१८)

यहाँ तक कि आधुनिक डॉक्टरों ने भी यह सिद्ध किया है, कि क्रोध के कारण रक्तचाप का तीव्र होना (B.P. High) स्वीकार करते हैं तथा क्रोध में व्यक्ति उचित—अनुचित का भेद करना भूल जाता है।

जीव वैज्ञानिक शरीर को एक मशीन के रूप में मानते हैं तथा मशीन की एक निश्चित कार्य—क्षमता होती है। इसी बात का ध्यान में रखते हुए कालिदास ने कुमारसम्भव के पांचवें सर्ग में शरीर को ही समस्त कर्त्तव्य कर्मो का प्रथम साधन बताते हुए शरीर की रक्षा करने की सलाह दी है।[१८]

अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते।
अपि स्वशक्तया तपसि प्रवर्तसे शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।।

(कुमारसम्भवम् — ५/३३)

वैज्ञानिक क्रोध का प्रमुख कारण थाइराइड ग्रन्थि से उत्पन्न हार्मोन को मानते हैं और क्रोध के समय रक्तचाप ज्यादा होने के कारण चेहरे व आँखों का लाल पड़ना पलकों व होठों का फड़कना स्वाभाविक है। इसी विषय में कुमारसम्भव के पांचवें सर्ग में ब्रह्मचारी के प्रतिकूल बोलने पर काँपते हुए अधरोष्ठ से तथा लाल किनारे वाले नेत्रों से भौहें टेढ़ी करके ब्रह्मचारी पर पार्वती द्वारा दृष्टि डज्ञली गयी है।[१९] यह बात इस श्लोक में बताई गई है, यथा —

इति द्विजातौ प्रतिकूलवादिनि प्रवेपमानाधरलक्ष्यकोपया।
विकुञ्चितभ्रूलतमाहिते तथा विलोचने तिर्यगुपान्तलोहिते।।

(कुमारसम्भवम् — ५/७४)

कालिदास के ग्रन्थ रघुवंशमहाकाव्यम् के प्रथम सर्ग में मनु के पवित्र कुल में उत्पन्न राजाओं में श्रेष्ठ दिलीप नामक राणा फ्रेंड होने का वर्णन है। आधुनिक जीवविज्ञान में भी आनुवांशिक लक्षणों का पाया जाना स्वाभाविक है। रघुवंश के १३वें सर्ग में श्रीरामचन्द्र जी सीता से कहते हैं, कि यह तिमि नामक मछली प्रथम मुख खोलकर समुद्र में विद्यमान क्रोधविश में जीवों सहित जल को पी लेती है और बाद में मुख बन्द करके अपने मस्तक पर विद्यमान छिद्र द्वारा उस जल को निकाल देती है। तो उसकी शोभा फव्वारे जैसी होती। वैज्ञानिक भी व्हले मछली द्वारा ऐसे ही भोजन करना स्वीकार करते हैं।[२०] इस बात को श्लोक के माध्यम से दर्शाया गया है, यथा—

ससत्वमादाय नदीमुखाम्भ सम्मीलयन्तो विवृताननत्वात्।
अमी शिरोभिस्तिमय सरन्ध्रैरुर्ध्व वितन्वन्ति जलप्रवाहन्।।

(कुमारसम्भवम् — १३/१०)

(११) कालिदास की कृतियों में पर्यावरण विज्ञान

कालिदास के ग्रन्थ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में शकुन्तला की विदाई हो रही है उस समय मर्षि काश्यप कहते हैं, कि जो घनी छाया वाले वृक्ष हैं, उन वृक्षों से सूर्य की किरणों का ताप दूर हो जाये।[२१]

श्छायाद्रुमैर्नियमितार्कमयूरवतापः।

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् — ४/११ श्लोक की सूक्ति)

कहा जाता है कि वृक्षों की अत्यधिक कटाई के कारण आज पृथ्वी का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है अतः कालिदास के समय की बात है उस समय वृक्षों की सघनता और अधिकता के कारण तापमान सन्तुलित रहता था।

आधुनिक पर्याव्रण वैज्ञानिकों के शोध द्वारा यह सिद्ध हो गया है, कि यज्ञ में जो दिव्य—पदार्थों की आहुति दी जाती है उससे उत्पन्न गन्ध के कारण पर्यावरण के आस—पास के ३३ प्रतिशत जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। इसी विषय में महाकवि कालिदास द्वारा रचित ग्रन्थ कुमारसम्भवम् के पंचम सर्ग में भी यज्ञानुष्ठान के कारण तपोवन को पवित्र बताया गया है।[२२]

विरोधिसत्त्वोजितपूर्वमत्सरं द्रुमैरभीष्टप्रसवाचितातिथि।
नवोटजाभ्यन्तरसंभृतानलं तपोवनं तच्च बभूव पावनम्।।

(कुमारसम्भवम् — ५/१७)

इस प्रकार रघुवंश प्रथम सर्ग में भी हवन की महक से मिला हुआ धुंआ आश्रम की ओर आते हुए अतिथियों को पवित्र कर रहा था।[२३]

अभ्युत्थिताग्निपिशु नैरतिथीना श्रमोन्मुखान्।
पुनानं पवनोद्धूतैर्धूमैराहुतिगन्धिभिः।।

(रघुवंश. — १/५३)

रघुवंश के त्रयोदश सर्ग में सूर्य की किरणें समुद्र से जल ग्रहण करती हैं और ही जल वर्षा के रूप में सहस्त्र गुना बनकर पृथ्वी पर बूँद के रूप में गिरती हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है, कि सूर्य की गर्मी से पानी का वाष्पीकरण होकर वायुमण्डल में मिलना फिर संघनन क्रिया द्वारा वाष्प का पानी में बदलना वर्षा का कारण माना जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूपेण कहा जाता है, कि महाकवि के साहित्य का विहंगावलोकन करने से यह स्पष्ट होजाता है, कि इन्होंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति के अन्तः एवं बाह्य स्वरूप को भली—भांति प्रत्यक्ष किया था। वस्तुतः ऋषियों, महर्षियों एवं महापुरुषों को संसार के अतीत एवं समस्त पदार्थ निर्मूल से प्रतीत होते हैं। ये कहने में कोई अतिशय नहीं है, कि महाकवि कालिदस का साहित्य समस्त आध्यात्मिकताओं के साथ—साथ वैज्ञानिक तथ्यों से भी परिपूर्ण है। प्रकृत ऐसे विषयों पर चिन्तन मील का पत्थर सिद्ध होगा।

सन्दर्भ

[1] महाकवि कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, १—९, आगरा, महालक्ष्मी, १८८५

[2] वही, ६—१

[3] महाकवि कालिदास, विक्रमोर्वशीयम्, १—४, लाहौर, संस्कृत पुस्तकालय, १९२६

[4] महाकवि कालिदास, कुमारसम्भव, ४/३३, मुम्बई, निर्णय सागर, १९३५

[5] वही, ५/५

[6] विज्ञान, कक्षा—९, पृ. सं. २

[7] कालिदास, रघुवंशमहाकाव्य, २/७२, वाराणसी, चौखम्बा, १८६१

[8] वही, १३/१२

[9] कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ३/६ श्लोक की सूक्ति, आगरा, महालक्ष्मी, १८८५

[10] वही, ३/१८

[11] कालिदास, रघुवंशमहाकाव्यम्, २/२३, वाराणसी, चौखम्बा, १८६१

[12] कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ३/२१ श्लोक की सूक्ति, आगरा, महालक्ष्मी, १८८५

[13] दैनिक भास्कर (२६ मई, २०११), पृ. सं. ११ (कॉलम—१)

[14] कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ४/५, आगरा, महालक्ष्मी, १८८५

[15] कालिदास, रघुवंशमहाकाव्यम्, १३/२४, वाराणसी, चौखम्बा, १८६१

[16] वही, ६/१३

[17] कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ४/१८, आगरा, महालक्ष्मी, १८८५

[18] कालिदास, कुमारसम्भवम्, ५/३३, मुम्बई, निर्णय सागर, १९३५

[19] वही, ५/७४

[20] कालिदास, रघुवंशमहाकाव्यमद्व १३/१०, वाराणसी, चौखम्बा, १८६१

[21] कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ४/११ श्लोक की सूक्ति, आगरा, महालक्ष्मी, १८८५

[22] कालिदास, कुमारसम्भवम्, ५/१७, मुम्बई, निर्णय सागर, १९३५

[23] कालिदास, रघुवंशमहाकाव्यम्, १/५३, वाराणसी, चौखम्बा, १८६१